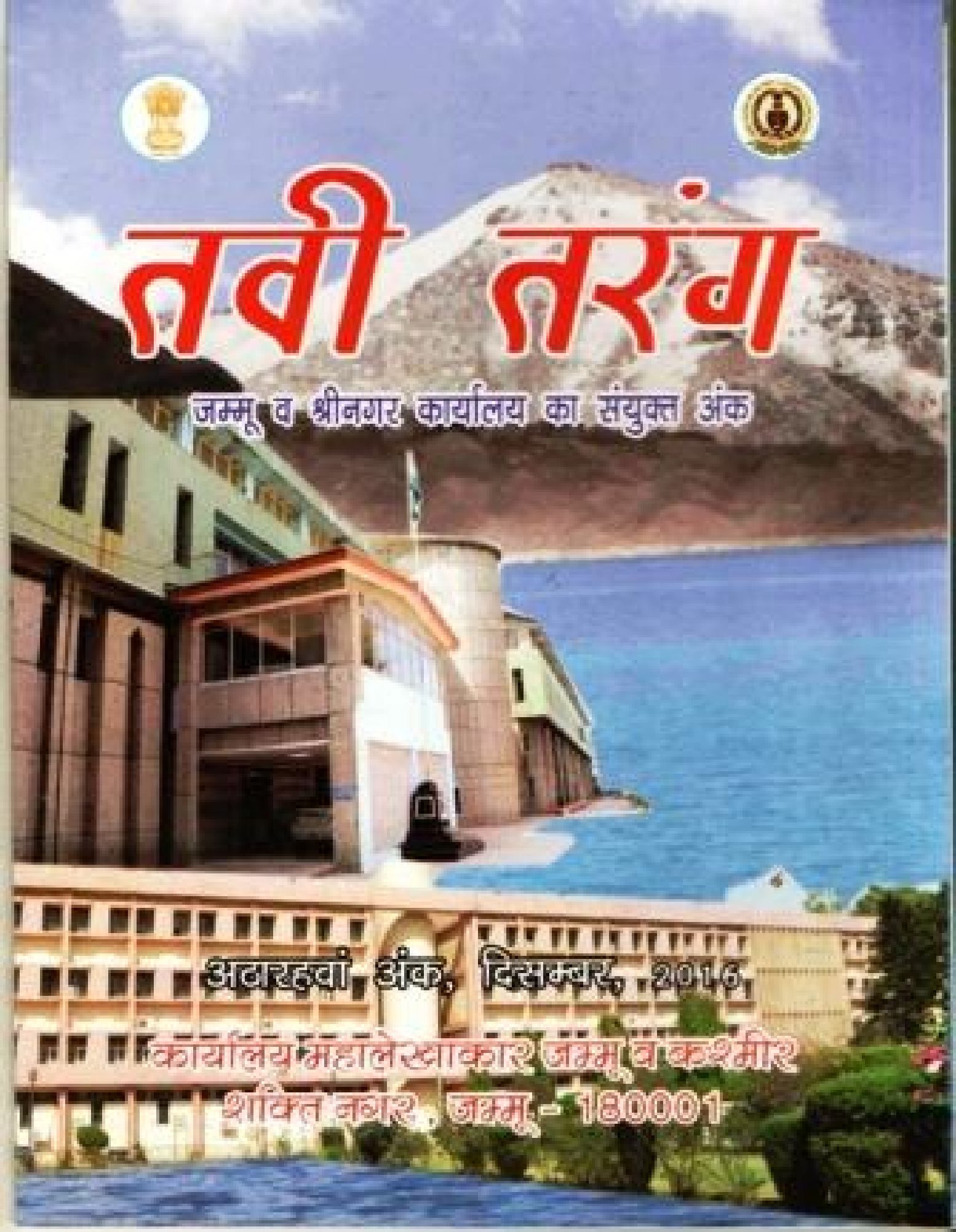

तवी तरंग

जम्मू व श्रीनगर कार्यालय का संयुक्त अंक

अठारहवां अंक, दिसम्बर, 2016

कार्यालय महालेखाकार जम्मू व कश्मीर
शक्ति नगर, जम्मू - 180001

कार्यालयीन पत्रिका तवी तरंग के 17वे अंक का विमोचन एवं हिन्दी दिवस 2015 की झलकियाँ

कार्यालयीन हिन्दी पत्रिका

तवी तरंग

जम्मू व श्रीनगर कार्यालय का संयुक्त अंक

अंक	:	अठारहवां (2016)
प्रकाशक	:	महालेखाकार जम्मू व कश्मीर, जम्मू फोन : 0191–2581290 फैक्स : 0191–2582065
मूल्य	:	राजभाषा के प्रति निष्ठा
मुद्रक	:	जंडियाल प्रिन्टिग प्रैस, मोहिन्द्र नगर, जम्मू
फोटो	:	आर0 के0 स्टूडियो तालाब तिल्लो, जम्मू
मुख्य पृष्ठ	:	श्रीनगर एवं जम्मू कार्यालयों के साथ पोंगयागं झील, लेह
पिछला पृष्ठ	:	1. श्री माता वैष्णों देवी का भव्य भवन 2. शांति स्तूप, लेह 3. दरगाह हज़रतबल, श्रीनगर
संपर्क सूत्र	:	हिन्दी कक्ष (लेखा व हकदारी) कार्यालय महालेखाकार जम्मू व कश्मीर, शक्ति नगर, जम्मू–180001

पत्रिका में छपी रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने विचार हैं सम्पादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है।

सम्पादक

तवी तरंग परिवार

स्वत्वाधिकार	:	महालेखाकार, (ले. व. हक.) जम्मू व कश्मीर, जम्मू
मुख्य संरक्षक		श्री के सुब्रह्मण्यम महालेखाकार जम्मू व कश्मीर
संरक्षक	:	श्री पी.सी.एस. नेगी , उप महालेखाकार

संपादक मण्डल

मुख्य संपादक	:	श्रीमती मीना धर रैना	(व0 ले0 अधि0)
संपादक		श्रीमती प्रोफिल्ला मिसरी	(व0 ले0 प0 अधि0)
	:	श्री कृष्ण लाल चौधरी	(व0 ले0 अधि0)
उप सम्पादक	:	श्रीमती दर्शना भारती	(ले0 अधि0)
प्रबंध सम्पादक	:	श्री रवि कुमार शर्मा	(ले0 अधि0)
	:	श्री भजन सिंह	(स0 ले0 प0 अधि0)

सदस्यगण

1.	श्रीमती वीणा शर्मा	(स0 ले0 अधि0)
2.	श्री रमेश चन्द्र	(स0 ले0 अधि0)
3.	श्री नंदीप बख्शी	(स0 ले0 प0 अधि0)
4.	श्री सुनील कुमार	(क0 हि0 अनु0)
5.	श्री फूल सिंह	(क0 हि0 अनु0)
6.	श्री ओम प्रकाश डोई	(क0 हि0 अनु0)

कविता / कहानियाँ

क्र.	शीर्षक	रचानकार नाम	पदनाम
1.	सदेश		
2.	सम्पादकीय	मीना धर रैना	व.ले. अधि.
3.	वो विश्वगुरु कहलाऐगा	वीणा शर्मा	स.ले. अधि.
4.	हम	सन्दीप चौरसिया	लेखा परी.
5.	नेता जी का मर्ज	राजकुमार साहिल	ले. अधि.
6.	चांद खो गया	बिमला गुप्ता	व ले. परी.
7.	इकलौता बेटा विदेश में	अब्दुल मजीद राथर	उप महालेखकार
8.	प्रदूषण का ज़हर	राज कुमार साहिल	ले. अधि.
9.	नंदी गांव	मीना धर रैना	व.लेखा अधि.
10.	आनलाईन होगी शादी	राहुल कुमार	लेखा परीक्षक
11.	मैं नहीं बदली	सुरिन्दर कौर	स.ले.प.अधि.
12.	ऐ हिन्दी मुझे गर्व है	ओम प्रकाश चौधरी	स.ले.प.अधि.
13.	चलते रहो	रमेश कौल	स.ले.प.अधि.
14.	मेरा साथ निभा दे	वीना हप्पा	स. ले. प. अधि.
15.	सपनों का महत्व	दर्शना देवी	ले. अधि.
16.	वरदान	रतन लाल मान	व. ले.परी.
17.	जिन्दगी	सुनील कुमार	हिन्दी अनु.
18.	आस	तारो देवी	सेवानिवृत व. लेखा
19.	बचना मेरे दोस्तो	आशा वातल	व. लेखा.
20.	फोटो गैल्री		
21.	क्रोध बने अवरोध	रेनू अम्बारदार	व लेखा.
22.	गज़ल	सुशील सराफ	स.ले.प. अधि.
23.	तुलना का चक्रव्यूह	पुष्पा तिक्कू	सुपरवाईजर
24.	झूठी शान	संजीव वर्मा	स.ले.प. अधि.
25.	चंद शेर	सुनीता सरॉफ	स.ले.प.अधि.
26.	नज़म	सुनीता सरॉफ	स.ले.प.अधि.
27.	राष्ट्र निर्माण में हिन्दी का योदान	कुन्दन कुमार	लेखा परी.
28.	चटपटी चिट्ठी	रमैश कौल	स.ले.प अधि.
29.	समाज में नारी की स्थिति	मनु अनेजा	लेखा परी.
30.	मैं लौट आया	दर्शना भारती	लेखा अधि.
31.	नारी सशक्तीकरण	इंद्रराज मीना	लेख परी.
32.	आज के दौर में मीडिया का योगदान	पंकज कुमार	लेखा परी.
33.	टाईम पास	रवि कुमार शर्मा	लेखा अधि.
34.	उजालों से अब डर लगने लगने लगा है	दर्शना भारती	लेखा अधि.
35.	आपके पत्र		
36.	कार्यालय महालेखाकार		
37.	सेवानिवृति	सुनील कुमार	हिन्दी अनु.
38.	देहावसान		
39.	लेखा परीक्षा प्रतिवेदन के पन्नों से...	फूल सिंह	क.हि. अनु.

मुख्य संरक्षक की कलम से...

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'तवी तरंग' के 18वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका हिन्दी के विकास एवं हिन्दी के सहज प्रयोग के क्षेत्र में एक सराहनीय कदम है। हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो समूचे देश को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य करती है।

कार्यालय में रचनात्मक वातावरण तैयार करने तथा कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति निष्ठा जगाने में विभागीय पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उसी पथ पर अग्रसर रहते हुए कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'तवी तरंग' कार्यालय कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभाओं की अभिव्यक्ति के लिए मंच के रूप में कार्य कर रही है। पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारी और कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं।

मुझे आशा है कि 'तवी तरंग' का यह अंक भी गत अंक की भांति ज्ञानवर्धक एवं राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार तथा विभागीय कार्यकलापों में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

पत्रिका के सफल प्रकशन एवं उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

के. सुब्रमण्यम
महालेखाकार (ले व हक)
जम्मू व कश्मीर

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'तवी तरंग' के 18वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मैं पत्रिका से जुड़े रचनाकारों, पाठकों एवं सम्पादन मण्डल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देती हूँ जिन्होंने इस पत्रिका को प्रकाशित करवाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

पत्रिकाएँ विचारों के आदान–प्रदान का एक सशक्त माध्यम है इसलिए विभागीय पत्रिकाओं का योगदान राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में अत्यंत सराहनीय है। राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देना हम सब का संवैधानिक कर्तव्य भी है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी पत्रिका का यह अंक कार्यालय के कर्मियों के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होगा। हिन्दी दुनिया की उन्नत भाषाओं में से एक है। हिन्दी में कार्य करने में हमें गर्व की अनुभूति होनी चाहिए।

पत्रिका 'तवी तरंग' के 18वें अंक के प्रकाशन पर सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

शीला जोग

श्रीमती शीला जोग
प्रधान निदेशक (क्षे.प्र.स.)
जम्मू व कश्मीर

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय द्वारा हिन्दी पत्रिका 'तवी तरंग' के 18वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह हमारे लिए गौरव की बात है। किसी भी देश की सांस्कृतिक गरिमा और गौरवशाली इतिहास को जानने का माध्यम उस देश की राष्ट्रभाषा होती है। कार्यालय द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार करने तथा कार्यालय में कार्यरत कर्मियों की सृजनात्मक प्रतिभा को सशक्त मंच प्रदान करने के साथ कार्यालयीन गतिविधियों में हिन्दी कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सार्थक एवं सफल कदम है। मैं इस अवसर पर पत्रिका परिवार के सभी रचनाकारों, संपादकों एवं अन्य सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ जिनके अथक प्रयासों में इस पत्रिका के 18वें अंक का प्रकाशन संभव हो पाया है।

पत्रिका के वर्तमान अंक तथा भविष्य में भी इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतू मेरी शुभकामनाएं।

होवेदा अब्बास
महालेखाकार (लेखा परीक्षा)
जम्मू व कश्मीर

संरक्षक की कलम से.....

हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका 'तवी तरंग' के 18वें अंक को आपके कर कमलों में अर्पित करते हुए मुझे गौरव एवं हर्ष की अनुभूति हो रही है। संपादक मंडल एवं अन्य सदस्यगणों का पत्रिका के प्रकाशन में योगदान सराहनीय है। पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से प्रयत्न किया गया है कि सभी भाषा–भाषियों को हिन्दी में अभिव्यक्ति का अवसर मिले एवं कार्यालयीन कार्यों को हिन्दी में करने के प्रयत्न को बढ़ावा दिया जा सके। इससे न केवल कार्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों एवं विभागीय कार्यकलापों की जानकारी हिन्दी, में उपलब्ध होती है बल्कि यह कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रेरित भी करती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ अपने बहुउद्देशीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में पूर्णतः सफल रहेगी।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति तथा उज्जवल भविष्य की निरन्तर कामना करते हुए।

पी०सी०एस० नेगी
उपमहालेखाकार (प्रशासन)
जम्मू व कश्मीर

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'रावी तरंग' के 18वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इन पत्रिकाओं के माध्यम से कार्यालय में हिन्दी में कार्य करने के अनुकूल वातावरण तैयार होता है तथा कार्यालय के कर्मियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करने का अवसर भी मिलता है। पत्रिका परिवार के सभी रचनाकारों, संपादकों तथा पाठकों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

के० के० बख्शी
उप महालेखाकार (प्रा० एवं राजस्व)
जम्मू व कश्मीर

सम्पादकीय

रावी तरंग के अठारहवें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इस अंक में सभी भाग लेने वाले रचनाकार कवि/कवित्रियां बधाई के पात्र हैं। भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा मानव अपने मन के भाव दूसरों तक पहुँचाता है। आशा करती हूँ कि इस पत्रिका की हर रचना पाठक के मन को मोह लेगी तथा एक संदेश पहुँचाने में सफल होगी।

इस पत्रिका के प्रकाशन में निर्देश एवं मार्ग दर्शन देने के लिए मैं सभी अधिकारी गण विशेष तौर पर महालेखाकार (लेखा एवं हक) का आभार प्रकट करती हूँ। सम्पादक मण्डल का आभार प्रकट करते हुए मैं उन सभी रचनाकारों सुधी पाठकों तथा उन सभी कर्मियों को बधाई देती हूँ जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस पत्रिका के साथ जुड़े हुए हैं। आशा करती हूँ कि आप सब आगे भी इसी प्रकार योगदान देते रहेंगे ताकि यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

मीना धर
प्रधान सम्पादक

क्षे. प्र. संस्थान जम्मू में भारत के नियंत्रक महालेखा परीक्षक का निरीक्षण दौरा

श्रीनगर कार्यालय में भारत के उप-नियंत्रक महालेखा परीक्षक का निरीक्षण दौरा

वर्ष 2016 में आयोजित हिन्दी दिवस की झलकियाँ

वो विश्वगुरू कहलाऐगा

वीणा शर्मा
स.ले अधिकारी

इतने प्यार से मुझे बुलाया,
देश भक्त हूँ, मैं भी चला आया,

पर पूछता हूँ आप से
क्या आज में स्वतन्त्र हूँ?
70वी वर्षगांठ पर भी
आज मैं परतन्त्र हूँ।

परतन्त्र हूँ दिमाग से, विचार से
परतन्त्र हूँ मैं लोभ से, आक्रोश से।

बोस कुर्बानी दे गए–2
भगत भी सूली चढ़ गए
सुख देव गुरू ने अनुकरण किया
और भारत को स्वतन्त्र किया।

कहाँ थे याद आए वे–2
जब टुकड़े किए देश के
कुर्सी का लोभ आ गया
जो बन कर काल छा गया।

फिर बोया बीज द्वेश का–2
और घर बना कलेश का
हिन्दु मुस्लिम बंट गया
धर्म को आगे कर गया।

चरित्र का हनन हुआ–2
फिर गोलियों का चलन हुआ

निर्दोष को मारकर
भविष्य वीर बन चला।

इंसानियत है मर चुकी–2
सभ्यता सूली चढ़ चुकी
क्या मुंह उन्हें दिखाओग–2
शर्मिंदा होके जाओगे।

समय अभी है आज भी
तुम पोंछ लो पिछली तख्तियां
सुधार लो समाज को,
मिटा के अपनी गल्तियां।

यूं रोक लो अपने स्वार्थ को–2
सिर्फ देश की ही बात हो,
पीढ़ियों का साथ हो।
भारत का पूर्ण विकास हो।।

भारत का पुर्न निर्माण हो–2
सभ्यता इसी की जान हो,
इंसानियत भरपूर हो,
और विश्व में मशहूर हो।

ये पाक, चीन छोड़ दो–2
ब्रह्मांड राग गाऐगा
हर जन्म मेरा भारत में हो
वो विश्व गुरू कहलाऐगा–2

जय हिन्द, जय भारत

हम

सन्दीप चौरसिया
(लेखा परीक्षक)

कभी फुरसत में मिलो तो बतायेंगे हम
ज़िन्दगी जी कैसे जाती है ये सिखायेंगे हम।

जज़्बे को जगाया कैसे जाता है ये दिखलाएंगे हम
उस रास्ते पर चलना सिखायेंगे हम।

कहीं ऐसा न हो, जाते–जाते खुद सो जायें हम
कठिन है रास्ता, फिर भी चलते जायेंगे हम।

ज़िन्दगी की दास्तॉं क्या है, ये लिखायेंगे हम
जीवन का सच क्या है, ये बतायेंगे हम।

आपस के गिले शिकवों को मिलकर मिटायेंगे हम
जिसे खुशी न मिली हो, उसे खुशी दिलायेंगे हम।

रीति–रिवाज सोचा न होगा वह भी कर जायेंगे हम
अपनी दौलत यहीं छोड़ जायेंगे हम
हमारी किस्मत में क्या है, यह भी आज़मायेंगे हम।

नेता जी का मर्ज

राजकुमार साहित
लेखा अधिकारी

नेताओं के चोंचले नेता ही जाने
हम तो बस इतना ही माने
जो मिल गया वही हकीकत है
जो न मिला वो अफसाने
हमारे प्रसिद्ध नेता राम प्यारे
एक दिन पड़ गये बिमार बेचारे
छोड़ी न कोई इलाज में कसर
दवा दारू का भी हुआ न असर
झाड़ फूंक और हवन करवाये
जगह-जगह पूजन भी करवाये
फिर भी नेता जी ठीक न हुये
दिन प्रतिदिन और गम्भीर हुए
सब टोटके जब बेकार हो गये
नेता जी अस्पताल में भर्ती हो गये
वहां भी हालत न सुधरी
नब्ज़ तेज़ हुई, सांस भी उखड़ी
आंखें सूजी, पेट फूला
टांगे हुई झूलता झूला
अब चम्चों को समझ आया
नेता जी का मर्ज क्या है
आखिरकार यह भी तरीका
आजमाने में हर्ज क्या है
अस्पताल के बेड, टेबल, कुर्सियां
सब इकट्ठे किये, हाल में पहुंचाये
सारे कर्मचारी और रोगी पब्लिक की जगह बिठाये
स्टेज बनाई और माईक लगाया
हाल को भी खूब सजाया।
फिर एक चम्मचा दौड़ा आया
नेता जी के कान में फुसफुसाया
नेता जी आप यहां पड़े है
विपक्षी अपनी जिद पर अड़े है
इसीलिए पार्टी ने जलसा किया है
आपको सारा जिम्मा दिया है
इतना सुनते ही नेता हरकत में आये
आंखें खोली और मंद-मंद मुस्काये
नेताजी ने हाथ से इशारा किया
चमचों ने फटाफट सहारा दिया
जैसे तैसे नेता जी को स्टेज पर पहुंचाया
माईक हाथ में दिया, हार पहनाया
पूरे दो घण्टे नेता ने भाषण दिया
कभी यह तो कभी वो आश्वासन दिया
भाषण करते ही नेता की तबीयत सुधर गई मगर
सुनने वाले रोगियों की तबीयत और बिगड़ गई।

चांद खो गया

बिमला गुप्ता
व.ले.प.

आएगी रात दीवाली की, और दीप जलेंगे घर-घर में
आएगी बारात सितारों की, पर चांद खो गया है।
जिसको सराहते थे, आंखों में हजारों में
वह गीत मेरे मन का, अब ख्वाब हो गया है।
हीरा समझा के जिसको, रखा बड़े जतन से,
किसी और के गले का, वो हार हो गया है।
नन्हा सा पौधा जिसको, बड़े प्यार से था सींचा,
किसी और के चमन का वो फूल हो गया है।
हमने जिसे तराशा, मेहनत लगन, हुनर से
वह देश छोड़ अपना, परदेसी हो गया है।
अपना जिसे समझकर, हम इतनी दूर आए
इस पार छोड़ हमको, उस पार हो गया है।
उसने था जो भी बक्शा, बांधा था पोटली में
अब गांठ खुल गई तो, सब कुछ बिखर गया है।
अनगणित कविताएं भरी हुई कवि के अवचेतन में
कवि मौन क्यों हुआ है, क्या शब्द खो गया है।
क्यों चांद खो गया है।

इकलौता बेटा विदेश में

अब्दुल मजीद राथर
उप महालेखाकार

एक बार, एक छोटे से गांव में शूबली नाम का व्यक्ति रहता था जो अपने गांव से 50 किलोमीटर दूर एक सरकारी कार्यालय में औसत दर्जे का कर्मचारी था। उसका छोटा सा परिवार था जिसमें उसकी पत्नी और एक लड़का जिसका नाम नादिम था। शूबली जब शाम को घर लौटा तो उसका चेहरा बड़ा उदास था। जब पत्नी ने कारण पूछा तो शूबली ने बताया उसका तबादला दूसरे कार्यालय में हो गया है जो उसके घर से 100 किलोमीटर से भी अधिक है अत: वो रोज़ शाम को घर नहीं लौट पायेगा। इस पर पत्नी ने शूबली को समझाया कि इसमें दु:खी होने वाली कोई बात नहीं है। अगर शूबली एक महीने में भी घर का चक्कर लगा ले तो ठीक है। बाकी वो सब कुछ संभाल लेगी। पत्नी के समझाने पर शूबली ने दूसरे कार्यालय में नौकरी पर जाना आरम्भ कर दिया और कार्यालय के पास ही एक कमरा ले लिया। अब शूबली हर महीने वेतन लेने के बाद अपने गांव आ जाता और एक दो दिन रहकर वापस लौट जाता।

कुछ समय के पश्चात ही शूबली की पत्नी शिकायत करने लगी कि नादिम पढ़ाई में बिलकुल मन नहीं लगा रहा है और सारा दिन गांव के आवारा लड़कों के साथ घूमता रहता है। जो चिन्ता वाली बात थी। अत: सलाह मशविरा करने के पश्चात इस नतीजे पर पहुंचे कि शूबली नादिम को अपने साथ ले जायेगा और वहां पर अच्छे स्कूल में दाखिल करवा देगा। यह सुनकर नादिम भी खुश हुआ और माता पिता को आश्वासन दिया कि वो भी शहर जाकर खूब मन लगाकर पढ़ाई करेगा और अपने माता पिता को निराश नहीं करेगा। शहर आकर नादिम ने वह कर दिखाया जैसा उसने कहा था।

नादिम ने पहले बी.ए फिर एम.ए अच्छे नंबरों के साथ पास की और तो और उसने के.ए.एस. भी पास कर लिया और सरकारी कार्यालय में अच्छी नौकरी भी पा ली। अब कमी किस बात की थी। शूबली ने अपने इलाके की सुन्दर लड़की ढूंढकर उससे नादिम की शादी कर दी। उसी दौरान शूबली सरकारी नौकरी से रिटायर हो चुका था इसलिये वह अपने पैतृक गांव लौट जाना चाहता था। मगर नादिम की अपनी नौकरी थी और अच्छा खासा मकान भी खरीदा हुआ था। अत: नादिम ने गांव लौटने से मना कर दिया और अब शूबली अकेला ही गांव लौट आया। लेकिन नादिम अपने माता पिता को फोन करता रहता जब भी मौका मिलता वह गांव भी चक्कर लगा लेता। नादिम की शादी को दो साल बीते तो उनके घर सुन्दर बेटा पैदा हुआ जिसका नाम उन्होंने बड़े प्यार से मामून रखा।

मामून भी अपने पिता की तरह पढ़ाई में बहुत होशियार था। वह हर साल, हर क्लास में प्रथम ही आता। नादिम भी अपने पुत्र की कामयाबी पर फूला न समाता और हर खुशी अपने माता पिता के साथ फोन पर बांटता। नादिम के माता पिता इस दुनिया से गुज़र गये तो अब नादिम का एक ही उद्देश्य था कि मामून को अच्छी शिक्षा दिलाये। नादिम की कोशिश के फल स्वरूप ही मामून ने मैडिकल कॉलेज में दाखिला ले लिया था। पहले एम.बी.बी.एस और फिर एम.डी की परीक्षा भी पास कर ली थी। अब मामून के सपने बहुत बड़े थे। इसी दौरान नादिम और उसकी पत्नी भी शूगर के मरीज़ हो चुके थे मगर उन सब बातों की परवाह किये बगैर मामून ने यह मन बना लिया कि वो देश के बाहर जाकर ही नौकरी करेगा और एक दिन अमेरिका चला गया और वहां पर नौकरी करने लगा। इतना ज़रूर था कि मामून हफ्ते में एक बार फोन ज़रूर कर लेता। नादिम ने कई बार मामून को फोन कर बताया कि उसकी मां ठीक नहीं है एक बार आकर मिल जाये मगर मामून हर बार कोई न कोई बहाना बना देता।

अब तो नादिम और उसकी पत्नी पर दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा था जब मामून ने फोन पर यह बताया कि उसने अमेरिका में ही एक अंग्रेज़ लड़की से शादी कर ली है जब कि नादिम और उसकी पत्नी चाहते थे कि मामून अपने देश लौट आये और अपने ही देश की किसी लड़की से शादी करे। मगर ऐसा हुआ नहीं जिसको नादिम की पत्नी सह न सकी और अन्तत: उसने

देह त्याग दी अब नादिम अकेला ही रह गया। उसका अपना कोई न था। मगर शहर के लोग उसे बहुत प्यार करते और कभी-कभी उसको मिलने आ जाते मगर फिर नादिम को अकेलापन महसूस होता रहता बस उसे इस बात का इन्तज़ार रहता कि कब मामून उसे फोन करे, जब फोन आता तो नादिम की खुशी का ठिकाना न रहता। नादिम चाहता कि वो अपने बेटे से घण्टों बात करे मगर मामून के पास न तो इतना समय होता और न ही उसे कोई दिलचस्पी। वो काम की व्यस्तता का बहाना बना देता। मामून ने भी अब फोन करना कम कर दिया था अब तो दो अढाई महीने में एक बार ही फोन करता। अकेलेपन का एहसास और शूगर की बीमारी नादिम को अन्दर से खोखला कर चुकी थी। नादिम की हालत दिन ब दिन खराब हो रही थी। मगर उसने मामून को कभी भी नहीं बताया। वो सोचता कि मामून को जब भी मौका मिलेगा वो उसे ज़रूर देखने आयेगा इसी उम्मीद को लिये आखिर नादिम भी चल बसा।

इस बार तो हद ही हो गई मामून ने जब फोन किया तो नादिम के इन्तकाल हुये एक सप्ताह से भी ज़्यादा वक्त गुज़र चुका था मामून को अफसोस तो हुआ मगर उसने उन पड़ोसियों और शहर के लोगों का शुक्रिया तक नहीं किया जिन्होंने उसके पिता के शव को अपने रिशतेदारों से ज़्यादा समझकर दफनाया था। नादिम का जनाज़ा उस धूमधाम से उठा था कि मानो वो कोई मामूली इन्सान न होकर कोई लीडर था। हर कोई उसके जनाज़े में शामिल था। लोग इसलिये भी ज़्यादा थे क्योंकि वे जानते थे कि नादिम का कोई नहीं है। जो विदेशी बेटा अपनी मां के इन्तकाल में हाज़िर नहीं हुआ तो अब क्या आयेगा। नादिम के साथ पूरे शहर को हमदर्दी इसलिये भी थी कि अकसर शहर के लोग नादिम को अकेले सिर झुकाये, झुकी नज़रें शहर में टहलते देखा था। नादिम को जब दफनाया जा रहा था तो पूरे शहर की भीड़ गम में डूबी थी। मगर उधर से एक सिर-फिरा राही गालिब की यह पंक्तियां गुनगनाता गुज़र रहा था।

रहिये अब ऐसी जगह चलकर
जहां कोई न हो।
हमसुखन कोई न हो और हम जुबां कोई न हो
बे दर ओ दिवार सा एक घर बनाना चाहिये
कोइ हमसाया न हो और पासबां कोई न हो
पड़िये गर बीमार तो कोई न हो तिमारदार
और अगर मर जाइये तो नवाखा कोई न हो।

प्रदूषण का ज़हर

राज कुमार साहिल
लेखा अधिकारी

बर्बाद कर चुके हैं जंगल इतने
फैल रहा प्रदूषण का ज़हर।।
ये सुनामी तूफां और जलजले।
बरसा रहा मौसम भी कहर।।
मीठा सूरमा पीपल की छांव।
याद आये पुराना वो गांव।।
प्रगति की राह चलते–चलते।
बन गया है जो इक शहर।।
हर कोई यहां पर है रोगी।
अगली सदी दुनियां क्या होगी।।
मौत कर रही है तांडव।
ज़िन्दगी गई है अब ठहर।।
छू रहा है तापमान भी शिखर
पिघल रहा है अब तो गलेशियर
समुन्द्र का रूप भविष्य क्या होगा
नाले बन चले हैं अब नहर
फेल रहा प्रदूषण का ज़हर
बरपा रहा मौसम भी कहर।।

नंदी गांव

मीना घर रैना
वरिष्ठ. लेखा अधिकारी

हिमालय की गोद में बसा अबोध बालक जैसा चन्द्रमा की शीतल तथा श्वेत चांदनी में नहलाया ऐसा।

यह मनोरम स्थल जहां देवता भी लालायित हैं आने पर, यह है नंदी गांव, शायद भोले बाबा का दिया नाम।

प्रकृति यहां अपने नग्न दर्शन कराने में व्यस्त है मदमाती पवन झूम–झूम कर नृत्य में मस्त है।

सुबह की उषा किरण इस गांव के मस्तक को चूमती है। वीणा तार की झंकार में स्वर बज रहे हैं।

यह पावन धरा झील को गोद में झुला रही हैं और झील के किनारे–किनारे उन युवतिओं की अल्हड़ गाने की गूंज उनके सुर से सुर मिलाकर कोयल की कूक दिलों के बंद दरवाज़ों पर दे रही दस्तक।

यह समां भर देता है निष्प्राणों में भी प्राण, मादकता भरा वातावरण है चारों ओर, कोमल रागिनी के संग गा रही है खुलकर जिंदगी।

झरनों का यौवन देखो उनके कल–कल स्वर से फूटे नदियां बह रही हैं निश्चल पर सीमाएं न छूटे। हरियाली भरा स्थल है वृक्ष हैं फल फूल भरे प्रकृति का हर अंश मोह और संकोच की कलिख दूर करे।

यहां बना शिव का मंदिर भोले बाबा की देन जहां पर आकर सब जीव आरती करे दिन रैन।

पहली बसंत का आगमन और शिवालय का मनोरम दृश्य निर्मल भावनाएं लकेर बालकों का दैवी नृत्य।

वृद्धाओं का लोकगान तथा आहुति के बीच ओम नमः शिवाय की गूंज यह सब कैलाशपति को आने पर करते हैं बाध्य।

सांझ की बेला में यज्ञ के अग्नि की ज्वाला साधना पंछी के पंख लगाकर पूजे अराध्य

हर बसंत की तरह कल फिर बसंत की बेला है पर सुबह यह बसंत कहां तरस रहा है आकाश स्तब्ध है चांद तारे भी सहमे हैं अश्रुपूर्ण आंखें हृदय विदीर्ण हैं

यहां सब निस्तब्ध है चालीस मानवों की अंतिम यात्रा यज्ञ के स्थान पर मानव शव जिनमें दो नवजात बालक करते थे स्तनपान मां की अभी पहचान नहीं तो धर्म का कैसा होगा भान।

आकाश स्तब्ध है चांद तारे स्तब्ध है प्रकृति भी सहमी है ना ही पक्षी की चहचहाट न ही झरने की झरझर है।

पेड़ पौधे चल अचल सब आतंकित हैं जन्मों की शांति पलभर में फुर्र हो गई है क्या मानव धर्म ही सबका धर्म नहीं है।

क्यों इतराते फिरते वो अपने आतंक पर यहां मारने में बड़े बहादुर हो क्या बन गये खुदा।

मैं तुमसे पूछती हूँ दम है तो किसी को दो ज़िंदगी नहीं दे सकते हो तो क्या है तुम्हारी बन्दगी भटक गये क्यों राह से क्यों बन गये हो दानव।

कुदरत के अपने नियम हैं क्यों करते हो हस्ताक्षेप, वह है वीरों का वीर महानों का महान पल में चाहे बनाए पल में सुनामी लाए।

क्यों उठाया तुमने यह बीड़ा और देने लगे सज़ा क्या सृष्टिकर्ता इतना है कमज़ोर, अभी समय है समझो और सुधर जाओ।

आनलाईन होगी शादी

राहुल कुमार
लेखा परीक्षक

आनलाईन ही शादी होगी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।
कैम्पयूटर और बरॉडबैंड से
होगी आगे सारी शादी
पंडित हलवाई बराती,
उड़ेंगे अब सबके परखच्चे
आनलाईन ही शादी होगी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।।
आनलाईन ही नज़र मिली थी
आनलाईन ही प्यार हुआ
आनलाईन ही बातों बातों में
प्यार का इज़हार हुआ
आनलाईन ही हम भले हैं
आनलाईन ही हो तुम अच्छे
आनलाईन ही शादी होगी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।
कुछ ज़्यादा ही चाहिए
बस डोंगल ही काफी होगा।
भूल जाओ सब लोगों को
ना करो उन्हें इक्टठे।
आनलाईन ही शादी होगी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।
मां बाप के मिलने की
आगे ज़रूरत कम होगी
जनसंख्या बढ़ाने के लिए
बस कोपी करनी होगी
फिर चाहे जहां पेस्ट करो
उनके ही हो जायें बच्चे
आनलाईन ही शादी होगी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।
ये भी हो सकता है
वो तीन इंजेक्शन माता को
अब नहीं लग पायेंगे
हर बार डॉ. हार्ड डिस्क
अपग्रेड करते जायेंगे।
गर्भ में भी कन्नेक्ट रहे
वो सॉफटवेयर डाले जायेंगे
जानेंगे सब अंदर की बातें कि
कैसे अंदर बचे हैं बच्चे
आनलाईन ही शादी होगी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।
उस दुनिया में
न कोई मित्र होगा
न भावनाओं का मोल होगा
मार्केटिंग में होंगे सभी तब
बस विज्ञापन का ज़ोर होगा
4 फीट के छोटे घर में
अपनी दुनिया में हम अच्छे
आनलाईन ही शादी होगी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।
बच्चे कैसे होंगे
बच्चे होंगे हार्ड डिस्क संग
बस अपडेट करना होगा
बुद्धु बच्चा जी.बी का होगा
इंटेलीजेंट बच्चा टी.बी का होगा
भिखारी भी एम.बी में होंगे
गुगल होगा सबका ऐडरस
ऐडरस चिप उनके संग होगी
जाओ सबको कलिक करो
हो जायेंगे सब इक्टठे
आनलाईन ही शादी होगी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।
जो मातायें दूध पिलाती थी
वो नेट मुफ्त कर देगी
बाप परोटेक्शन देता था
वो एंटीवायरस देगा
पर हैंग हो गये कभी अगर
और बैठ गई मैमोरी
फिर मां–बाप को कुछ नहीं पता
कि मेरे हैं या तेरे बच्चे
आनलाईन ही होगी शादी
आनलाईन ही होंगे बच्चे।

मैं नहीं बदली

सुरिन्दर कौर
स.ले.प.ग्र.

हे मां,

मैं तेरी गुड़िया, कुछ बदल न पायी
अनजान खड़ी हूँ, तड़प रही हूँ
पर बदल न पायी

कोमल हूँ बस तुझे चाहती हूँ,
प्यार में तेरे, मैं झगड़ न पायी

तुझे मिलने की तड़प बढ़ी है,
समझाये सभी, मैं समझ न पायी
हे मां, मैं तेरी गुड़िया, कुछ बदल न पायी

घर बंटा तो तू भी बंटी
दिल भी बंटा, सांसें भी बंटी।

धड़कन मेरी जलती ही रही
मन में उलझन चलती ही रही
सब छूटा, सब टूटा
पर मैं बदल न पायी

हे मां,
मैं तुझे ही चाहूं अपने से ज़्यादा
आंसू ही निकलते हैं क्यों ज़्यादा

सबने समझाया रोको इनको
हम तो हैं, देखो ना हमको

पर जो सांसें तुझसे हैं जुड़ी
उसको चाहकर भी बदल न पायी

हे मां, मैं तेरी गुड़िया
कुछ बदल न पायी

मेरा साथ निभा दे

वीना हप्पा
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

मां मेरा साथ निभा दे
मेरी नैया पार लगा दे
मां तू है अंतरयामी
मैं हूं क्रोधी और कामी
मां मेरा अहंकार थमा दे। मेरी नैया.....
रूकी नैया पड़ी मझदार है
मेरा दिल तो बड़ा बेकरार है
कोई ऐसी पतवार चला दे। मेरी नैया.....
गुज़रा बचपन और जवानी
करके आना और कानी
बुढ़ापे में लाज तू रख दे। मेरी नैया.....
मेरे मन में है अशांती
सारे बुरे कर्मों की
कोई सुरमई तान सुना दे। मेरी नैया.....
मैं तो हूं बड़ा हरजाई
बनी किस्मत मैंने बिगड़ाई
बिगड़ी किस्मत तू बना दे। मेरी नैया.....
मुझे दान दो अपने ज्ञान का
सुख और स्वाभिमान का
मेरे मन की शान्ति बना दे। मेरी नैया.....
काम क्रोध मद लोभ अहंकार
रोकते है मेरी पतवार
चारों पहर रहो मेरे दिल में
हर खुशी में हर मुश्किल में
मेरी मुशकिल आसान बना दे। मेरी नैया.....
हो कोई मुझ जैसा अहंकारी
मां तू उसकी भी है हितकारी
मेरा भी हितकार करा दे। मेरी नैया.....
मेरा नाम ही तो है वीना
मुरली जैसा गुण कोई ना
मीठी तान मुरली की बना दे। मेरी नैया.....

सपनों का महत्व

दर्शना देवी
लेखा अधिकारी

दिलों के साज़ पर धड़कनों की आवाज़ पर
एक महल बनाया है सपनों का, उस पर तू राज कर।

अधिक पाने की चाह नहीं
कितने सपने टूटे परवाह नहीं
एक टीस तो दिल में उठती है
पर लब पर कोई आह नहीं
स्कून आये दिल को मेरे, ऐसी तू फरियाद कर
एक महल बनाया है सपनों का उसपे तू राज कर।

सहमे–सहमें से यूं रहना,
रिमझिम अश्कों का बहना,
रंजिशें अपने दिल की
किसी से न कहना
दिल की बस्ती को ऐसे तो तू बरबाद न कर
एक महल बनाया है सपनों का उसपे तू राज कर।

दुख के दिन भी कट जायेंगे
राहों पे बिखरे कांटे हट जायेंगे
यहां सांसों पर कोई पहरा हो
हर ख्वाब बड़ा ही सुनहरा हो
ऐसी नई सुबह का आगाज़ तू कर
एक महल बनाया है सपनों का उसपे तू राज कर।

खुदा की रहमत, एक दिन बरसेगी तुझ पर
खुशियां मिलेगी दामन भर–भर कर
गम का काला साया था,
जो कभी तुझ पर छाया था,
ऐसे बुरे पलों को न तू अब याद कर
एक महल बनाया है सपनों का, उसपे तू राज कर।

वरदान

रतन लाल भान
पम्पोश, व.से.प.

वरदान इतना दीजिए
हिन्दी को अपना लीजिए

हिन्दी से हिन्दोस्तान है, यह देश की पहचान है।
माने–न–माने यह कोई, हिन्दी हमारी शान है।

औरों को समझा दीजिए
हिन्दी को अपना लीजिए–वरदान इतना....

इस में बुराई कुछ नहीं, इसमें भलाई है छुपी।
लिखना और पढ़ना सीख लो, कुछ भी रहे न अनकही।

इतना तो उपकार कीजिए।
हिन्दी को अपना लीजिए–वरदान इतना....

हर वर्ष हमने प्रण किया, हर वर्ष यह वादा लिया।
हिन्दी को हम अपनाएंगे, वादा मगर वादा रहा।

वादा यह पूरा कीजिए,
हिन्दी को अपना लीजिए–वरदान इतना....

हिन्दी में पत्राचार हो, इसमें स्नेह और प्यार हो,
सब द्वार खुल जाएंगे तब, भाषा पर जब ऐतबार हो।

शुभ काम इतना कीजिए,
हिन्दी को अपना लीजिए–वरदान इतना....

जिन–जिन से तुम मिल पाओगे, उनको कृपया सिखलाओगे
हिन्दी की चर्चा आम हो, हर एक को समझाओगे।

सहयोग अपना दीजिए,
हिन्दी को अपना लीजिए–वरदान इतना....

हम सब को यह मालूम है, हिन्दी बड़ी मजलूम है,
मन से इसे स्वीकारिये, भाषा बहुत मासूम है।

बच्चों को सिखला दीजिए,
हिन्दी को अपना लीजिए–वरदान इतना....

लगता नहीं है कुछ कठिन, मन में अगर पक्की हो धुन
हिन्दी पे बस विश्वास हो, इसमें छुपे हैं लाख गुण।

पढ़–लिख के सिखला दीजिए,
हिन्दी को अपना लीजिए–वरदान इतना....

हिन्दी से हम कतराएं क्यों, अंग्रेजी पर इतराएं क्यों
भाषा हमारी सरल है, अपनाने से घबराएं क्यों।

गुन गान इसका कीजिए,
हिन्दी को अपना लीजिए–वरदान इतना....

माता से बिछड़ी बालिका, क्या दोष इसकी क्या खता
इर एक से विनती यह है, मिल जाए तो देना पता।

माता से मिलवा दीजिए
हिन्दी को अपना लीजिए
वरदान इतना दीजिए,
हिन्दी को अपना लीजिए।

ज़िन्दगी

सुनील कुमार
हिन्दी अनुवादक

जिंदगी ना जानें कैसे–कैसे रंग दिखाती है।
कभी धूप से छांव, कभी छांव से धूप।
कभी दुख से सुख, कभी सुख से दुख
के साथ यह जीवन बिताती है।
जिंदगी ना जाने कैसे–कैसे रंग दिखाती है।।

जीवन का वृक्ष ना जाने कब गिर जाए,
ना जाने कब यौवन का फूल मुरझा जाए,
जीवन भर आंख–मिचौली दिखाती है।
जिंदगी ना जानें कैसे–कैसे रंग दिखाती है।।

कभी निर्धन की झोली भर जाए,
धनवान को भी कभी तारे दिखाए।
जीवन के विभिन्न पहलुओं से मिलवाती है।
जिंदगी ना जानें कैसे–कैस रंग दिखाती है।।

कभी चंद लहरों के थपेड़ों से कश्ती डूब जाए।
तुफान में भी कभी तिनके का सहारा मिल जाए।
जीवन के उतार–चढ़ाव सिखाती है

जिंदगी ना जानें कैसे–कैसे रंग दिखाती है।।
कभी बेरंग में भी रंग भर जाए।
खूबसूरती पर भी कभी दाग लग जाए।
जीवन की कई किताबें पढ़ाती है।
जिंदगी ना जानें कैसे–कैसे रंग दिखाती है।।

कभी सूनी आंखें में सपने दे जाए।
कभी बने बनाये महल गिरा जाए।
जीवन की हर सच्चाई से रूबरू करवाती है।
जिंदगी ना जानें कैसे–कैसे रंग दिखाती है।।

कभी मात–पिता के माथे का बच्चे तिलक बन जाए।
पर वहीं उन्हें कभी दर–दर की ठोकरे खिलाये।
जीवन की अजब दुविधा दर्शाती है।
जिंदगी ना जाने कैसे–कैसे रंग दिखाती है।

आस

तारो देवी
सेवानिवृत वरिष्ठ लेखाकार

दिल न माने ऐसी बात
कैसे यह हो सकता है

बाहों में झुलाया मैंने
लोरी उसे सुनाई मैंने
हाथ पकड़ चलाया मैंने
सही राह दिखाई मैंने

दिल न माने ऐसी बात
कैसे यह हो सकता है

नाजुक नाजुक हाथों वाला
प्यारी प्यारी बातों वाला
भीड़ से घबराने वाला
जल्दी घर को आने वाला

दिल न माने ऐसी बात
कैसे यह हो सकता है

जब–जब देखा आस बढ़ी
जीने की एक राह दिखी
मां को मां ही रहने देना
सपने उस के तोड़ ना देना

दिल न माने ऐसी बात
कैसे यह हो सकता है

पीले पत्ते गिर जाएंगे
गम के बादल छट जाएंगे
एक बहार आ जाएगी
नया सवेरा हो जाएगा

दिल न माने ऐसी बात
कैसे यह हो सकता है

तोड़ना ना तूं दिल के तार
इज़्ज़त मेरी तेरे हाथ
सदा करूं मैं दिल से पुकार
रखना खुदाया मेरी लाज

दिल न माने ऐस बात
कैसे यह हो सकता है

जचना मेरे दोस्तो

आशा बातल,
वरिष्ठ लेखाकार

एक दिन चलते–चलते देखा,
एक मकान था बड़ा अनोखा
एक था उसमें प्रवेश द्वार,
वहां खड़ा था पहरेदार।
मैंने भीतर जाना चाहा,
पहरेदार ने शोर मचाया।
इसमें घुस तो जाओगे,
वापस खुश न आओगे।
तब मन धन खाली हो जाएगा,
वापस खुश न आओगे।
अन्दर गया तो क्या देखा–
वहां बैठी थी नरकों की नानी,
नष्ट कर रही थी भरी जवानी।
एक का था बड़ा रोब दबाव,
नाम था उसका शराब।
चरस गांजा उस घर के नौकर,
खिला रहे थे दर–दर ठोकर।
तंबाकू इस घर का नाती,
बांट रहा था बड़ी बडबादी।
बीड़ी–सिगरेट थी दो बहुएं,
छोड़ रही थी काले धुएं।
अफीम जर्दा इस घर के बेटे,
सुख की सांस न लेने देते।
गुटका तो सबका सरदार,
बीमारी का कर रहा व्यापार।
जब मैंने इनको देखा,
बाहर का दरवाजा खोजा।
सबने मुझको ऐसा घेरा,
लूट लिया सब कुछ मेरा।
मुफ्त में दिए उपहार
बिमारियां दी हजार।
पहुंच गया हूं मृत्यू के द्वार,
बीवी बच्चे हो गए बेघर।
सिर पर मौत खड़ी है,
शायद अंतिम घड़ी है।
दोस्तो कुछ कहना चाहता हूं,
मजबूरी में जाता हूं।
मेरी जैसी भूल न करना,
इस घर में कभी न घुसना।
जीते जी मर जाओगे,
मेरी तरह पछताओगे

कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

गणतंत्र दिवस समारोह 2016 की झलकियाँ

स्वतंत्रता दिवस समारोह 2016 की झलकियाँ

वर्ष के दौरान आयोजित हिन्दी कार्यशालाऐं

क्रोध बने अवरोध

रेनू अम्बारदार
वरिष्ठ लेखाकार

एक दूसरे से रोजाना लेता है प्रतिशोध
क्रोध बने अवरोध, प्रगति में क्रोध बने अवरोध
खा जाता है सदगुण सारे, जोड़ा करे बुराई
अपना कद उंचा करने को, सम्मुख करे सफाई
होने देता नहीं भूलकर, भले बुरे का बोध
क्रोध बने अवरोध।
अपनी मनमानी में जीता, अपने मन की करता
चाहे कितना बलशाली हो, नहीं किसी से डरता
उस पर हुआ आक्रमण इसका, जिसने किया विरोध
क्रोध बने अवरोध।
प्यारा नहीं किसी का, यह कौन इसे समझाये
सच पूछो तो इस दुनिया में क्रोध प्यार को खाये
जीवन बने सार्थक यदि तुम करो क्रोध पर शोध
क्रोध बने अवरोध।
क्रोध आग है एक तरह की, भस्म करे, जो जीवन को
धूं–धूं करके स्वाहा कर दे मुस्काते उपवन को
कह दो तुम अलविदा क्रोध को बस इतना सा है अनुरोध
क्रोध बने अवरोध–क्रोध बने अवरोध।

गज़ल

सुनीता सरॉफ
स.ले.प. अधिकारी

1. मुद्दतों बाद वो नज़र आया
आज फिर चांद मेरे घर आया।
रश्क करती है चांदनी मुझ पर
रंग जब से मेरा निखर आया।
तोड़ कर इस जहाँ के सब बंधन
दूर बस्ती से वो किधर आया।
बेबसी देखकर ज़माने की
आंखों में फिर लहू उतर आया।
उम्र सारी कटी समंदर में
तब मेरे हाथ में गुहर आया।

2. न जाने ये कैसी सज़ा दे रहे हैं
मेरे जख्मों को हवा दे रहे हैं।
सुकूं दे रहा खिज़ाओं का मौसम
बहारों का फिर भी पता दे रहे हैं।
सभी को मालूम है मरना है एक दिन
मगर सब ज़िंदगी की दुआ दे रहे हैं।
ये कैसा आया है दौर–ए–मुहब्बत
जो अपने हैं वो भी जफ़ा दे रहे हैं।
भटकता है उन के ही दम से ये गुलशन
वो खुशबू की सब को क्या दे रहे हैं।

तुलना का चक्रव्यूह

पुष्पा तिक्कू
सुपरवाईज़र

तुलना के चक्रव्यूह में भटकती रही सारा जीवन
तुलना का चक्रव्यूह न होता तो शायद सुखमय होता।
मेरा भी जीवन...

बचपन से ही तुलना की जाने लगी मेरी
हाव–भाव से तो लगता है, हैं इसके अच्छे लक्षण,
भविष्य जानने वाले क्या जान गए थे मेरा जीवन?
तुलना ग्रस्त न हुआ होता
तो शायद सुखमय होता
मेरा भी जीवन...

होश संभाला तो तुलना के तराजू में
जन्म दाताओं ने तोलना आरम्भ किया,
विधि के ही अनुसार तो चली थी मैं
पर प्रयास करके भी फीका रंग पकड़ने लगा मेरा
जीवन।
तुलना ग्रस्त न हुआ होता
तो शायद सुखमय होता
मेरा भी जीवन...

यौवन ने ली अंगड़ाई तो क्या मैं
रह पाती तुलना से वंचित
सुयोग्य व कर्मशील होने पर भी
कहीं न हो पाया मेरा चयन।
तुलना ग्रस्त न हुआ होता
तो अवश्य सुखमय होता
मेरा भी जीवन...

अब तो तुलना ने तो नया ही रूप अपनाया
तुलना का ही पहनावा मुझे अंत में पहनाया
तुलना...तुलना...तुलना...
तुलना श्रेणी में ही मैंने आरक्षण पाया
तुलना ग्रस्त न हुआ होता
तो शायद सुखमय होता
मेरा भी जीवन...

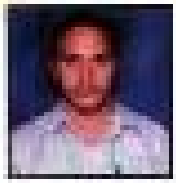

झूठी शान

संजीव वर्मा
सं० ले० प० अधिकारी

बहुत ही कम जीवन है जो हम अपने लिये जीते हैं – अधिकतर जीवन हम समाज में झूठे दिखावे या झूठी शान प्राप्त करने में व्यतीत कर देते हैं। हमारे हर कार्य – घरेलू, सामाजिक अथवा अन्य, अकसर हमारा एक ही मापदंड रहता है कि मान सम्मान प्राप्त करें, चाहे बाद में कष्ट ही क्यों न भोगने पड़ें मगर हम आडम्बर रचाने या दिखावटी व्यवहार से बाज नहीं आते। कई बार आपने लोगों को यह कहते सुना होगा कि हम यह खाते हैं हम वह खाते हैं, इस उद्योग की वस्तुयें उपयोग में लाते हैं–आदि आदि। अरे भाई आप कुछ भी खायें इस में दूसरों को बताने की क्या आवश्यकता है – आप जो भी खा रहे हैं अपने पेट में डाल रहे हैं। आप कुछ भी खा लें पेट में फूल तो उगेंगे नहीं।

कई लोग अपने लिये बड़े और भव्य भवनों का निर्माण करते हैं और फिर बताते हैं कि हमने अपने घर के शौचालय में दो लाख रू. का मकराना संगमरमर लगवाया है। जिसमें चेहरा भी स्पष्ट दिखाई पड़ता है। और भई – आप शौचालय में क्या देखना चाहते हैं। आप का शौचालय 10 हजार रूपये का है या पांच लाख रूपये का, आपने वहां क्या शमा लगानी है या पकवान तलने हैं? फजूल में लोगों की वाह वाही लूटने की तृष्णा। कई लोगों ने अपने गले में इतनी मोटी सोने या किसी अन्य कीमती धातु की जंजीर पहनी होती है और दिखाने के लिये उसे कमीज से बाहर निकाल कर चलते हैं– जैसे भैंस के गले में जंजीर डाली गई है। पता नहीं ये लोग क्या दिखाना चाहते हैं कि वे बहुत वजन उठा सकते हैं या अधिक धनी व्यक्ति हैं। क्या पता दिखाने की खातिर ऋण उठाकर ही सोने का पट्टा गले में डाला है। ऐसे दिखावटी लोगों का मूल्य बस उतना ही होता है जितने रूपये की वे जंजीर पहनते हैं।

कई बार तो देखने में आता है कि आदमी के रोजमर्रा जीवन की गाड़ी की धातु पस्त हो चुकी होती है फिर भी वो दिखावटी जीवन जीने के प्रयास में रहता है। विवाह या ऐसे ही कई अन्य समारोह पर वह ऋण उठा कर भी समारोह का आयोजन करता है और ऋणी होकर तनाव ग्रस्त रहता है। फिर भी बताता फिरता है कि बड़ा ही रमणीय समारोह आयोजित किया था मैंने। उसे लगता है कि सामाजिक प्रतिष्ठा इस आडम्बर से बढ़ी है। सत्य तो यह है कि लोग चाहे आप के विवाह आदि समारोह में बादाम, पिस्ता या अन्य छत्तीस प्रकार के व्यंजनों का सेवन करें पर बाहर आकर त्रुटियां अवश्य ही निकालते हैं। एक बार मुझे एक भव्य समारोह में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ। बारात एक गांव से आई हुई थी। खाना खाते–खाते एक ग्रामीण मेरे पास आकर बोला – देखिये भाई साहब – ये चटनी बू मार रही है। चूंकि जून मास था ऐसा होना स्वाभाविक था। जहां एक से एक बढ़िया व्यंजन उपलब्ध थे, पर उस ने अपनी भड़ास बेचारी चटनी पर निकाली। नतीजा यह निकला कि सभी मेहमानों के लिए चटनी चर्चा का विषय बन गई। वैसे चटनी भी कई प्रकार और कई स्वाद की होती है। क्या पता उस चटनी की खुशबू और स्वाद उस बाराती को पसन्द न आया हो। कहने का अभिप्राय यह है कि ऐसी प्रवृत्ति देखने में आती है कि टिप्पणी करना खाने से अधिक आवश्यक है। फिर भी हम समाज की झूठी वाह–वाही के पीछे होते हैं और अपने आप को कष्ट झेलने पे मजबूर करते हैं। हम सोचते हैं कि हमारा समारोह अस्मरणीय होना चाहिये। लोग आज खा कर कल भूल जाते हैं – यही सत्य है। विवाह तो विवाह, लोग मृत्यु जैसे शोक ग्रस्त अवसर पर भी दिखावे की भावनाओं को तृप्त करते देखे गये हैं। ये कहते सुने गये कि पिता जी की मृत्यु पर अर्थी के पीछे इतनी भीड़ उमड़ी कि पांव रखना भी असंभव हो रहा था या शहर का कोई भी व्यक्ति आये बिना न रहा। जिस भीड़ की बात की जा रही है वह तो बस भीड़ है जो एक सामाजिक दायित्व निभाने का कार्य करती है वर्ना उन्हें किसी की मृत्यु का शोक नहीं। पहले–पहले तो अर्थी के पीछे चल रही भीड़ राम नाम सत्य का जाप करते दिखती थी। पर अब यह चलन समाप्त हो चला है। लोग अपने निजी वाहनों पे सवार फर्राटे से शमशान जा पहुंचते हैं। समय का अभाव है। वहां खड़ी भीड़ में कोई मोबाईल सुन रहा होता है, कोई व्यापार

कुछ न किया अब सब कुछ किया और उनके श्राद्ध के बहाने हर वर्ष स्वादिष्ट पकवानों के चटखोरे लेंगे। सब दिखावा–संसार को दिखाने के लिये।

कई लोग अपने बच्चे को बड़ी पाठशाला में इसलिये दाखिला दिलवाना चाहते हैं क्योंकि पड़ोसी का बच्चा भी किसी बड़ी प्रसिद्ध पाठशाला में पढ़ता है, चाहे बाद में कितने ही आर्थिक संकट उठाने पड़ें। बच्चा चाहे पढ़ाई में प्रथम आये या न आये पर माता–पिता हमेशा प्रथम–पड़ोसी से प्रतिस्पर्धा करते रहेंगे।

बस यही कुछ करते हैं हम – दिखावा ही दिखावा। कभी शादी पर, कभी मृत्यु पर– "पिता जी सीधा स्वर्ग में गए। जैसे पिता जी के लिये आरक्षण करवा के रखा हो। कभी रोगों के नाम पर – वो रोग की गंभीरता से चिंतित नहीं–हां कितने लाख लगा दिये और कितना बड़ा हस्पताल था क्या बतायें। कभी खाने के नाम पर – ऐसे लोग घर में भिन्डी की सब्ज़ी खाकर बाहर आकर पनीर या मुर्गे के डकार लेने लगते हैं।

समझदारी इसी में है कि हम अपने आप को दिखावटी जीवन से बचाये रखें और फिज़ूल की प्रति स्पर्धाओं से खुद को बचायें। जितना है उतना ही दिखायें। वास्तविकताओं में विश्वास रखें अड़म्बरों से बचें। भीड़ की वाह–वाही के लिये अपने को कर्ज़दार न बनाएं।

चंद शेर

सुनीता सरोज
स.ले.प.अ.

1. हर स्मित अंधेरा रहता है
   ऐ चांद मेरे घर आया कर।।
2. चांद आया और चला भी गया
   पर इसकी मुझे खबर न हुई
3. काश ऐसा कभी खुदा करता
   कोई तेरे लिए दुआ करता।।
4. तुम समुन्दर की बात मत करना
   एक कतरे में मैं समुन्दर हूं।।
5. चोट लगती है जब भी फूलों से
   दर्द होता है एक ज़माने तक।।
6. एक मुद्दत से मेरी हसरत है
   मैं भी उतरूं कभी समुन्दर में।।
7. वो न होता अगर रफीक–ए–सफर
   मेरा अपना पता भी न होता।।
8. बेसबब अश्क यूं नहीं बहते
   सब की होती है दास्तां अपनी।।
9. बरसों से फिर रही हूं तमन्ना लिए
   मेरा भी तेरी ज़ात में एक दिन शुमार हो।।
10. निवाला हर कोई बनता है तेरा
    मगर ऐ मौत फिर भी तू हसीं है।।

नज़्म

इन्सान जब से
मतलबी हुआ है
हर शख्स यहां
तन्हा तन्हा हुआ है।
हर कली बेचैन है
बस खिलने के लिए
बहारों का मौसम
बदला बदला हुआ है।
मौत न जाने कब
आ के दे दे दस्तक
हम नादान समझते
वक्त ठहरा ठहरा हुआ है।

राष्ट्र निर्माण में हिन्दी का योगदान

कुन्दन कुमार
लेखा परीक्षक

हिन्दी हमारे देश की राजभाषा है। यह भारत में सबसे अधिक भूभाग में बोली जाती है। देश की कुल आबादी के 40% लोग प्रथम भाषा के रूप में तथा 30% लोग अपनी द्वितीय भाषा के रूप में इसका उपयोग करते हैं। भारत एक बहुभाषी देश है, जहाँ विश्व में सबसे अधिक भाषाएं बोली व लिखी जाती हैं। ऐसे देश में इतने प्रतिशत लोगों के द्वारा एक भाषा के प्रति अपनापन दिखाना अपने आप में उस भाषा की महत्ता को स्पष्ट करता है। भाषा लोगों को जोड़ने एवं समाज के विकास का सबसे बेहतर साधन है। चूंकि हिन्दी भारत के सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली व समझी जाती है, अतः भारत के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र निर्माण की यह भूमिका हिन्दी के द्वारा ही निभाई जा सकती है।

भारत करीब 150 वर्षों तक अंग्रेज़ों का उपनिवेश रहा था। अंग्रेज़ों ने जब भारत में अपना शासन आरंभ किया तब भारत अनेक प्रकार से कई रियासतों, भागों एवं टुकड़ों आदि में बँटा हुआ था। देश के सभी प्रदेशों के लोग अपनी–अपनी भाषा का प्रयोग करते थे। प्रारंभिक काल में जब स्वतंत्रता आंदोलन का प्रारंभ हुआ तो पढ़ा–लिखा मध्य वर्ग जो इसकी अगुआई कर रहा था उसने लोगों को जोड़ने के लिए भाषा की महत्ता को समझा। इस बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने हिन्दी को भारत की संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग करना शुरू किया। इसने देश को एक रूप में जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस संदर्भ में कुछेक महापुरूषों का नाम बहुत ज़रूरी है। महात्मा गाँधी जिनकी मातृ भाषा गुजराती थी, बाल गंगाधर तिलक जिनकी मातृ भाषा मराठी थी, सी० राजगोपालाचारी जिनकी मातृ भाषा तमिल थी आदि ने मिलकर राष्ट्रभाषा के महत्व को समझा तथा हिन्दी से देश को जोड़ने का सबसे सशक्त माध्यम माना। हिन्दी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना हुई। हिन्दी देश की संपर्क भाषा के रूप में लोगों को जोड़ने में बहुत अधिक सफल रही एवं राष्ट्र निर्माण का जो कार्यक्रम गाँधी जी तथा अन्य नेताओं द्वारा चलाया जा रहा था, पूर्णतया सफल रहा। हिन्दी के इस योगदान को देखते हुए संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी को प्रतिष्ठित किया गया।

हिन्दी संघ (अर्थात भारत देश) राजभाषा तो बन गई परंतु इसके राष्ट्रभाषा घोषित करने के पूर्व ही इसके साथ विवादों का साया भी जुड़ गया। दक्षिण के राज्यों प्रमुखतः तामिलनाडु तथा पं० बंगाल ने भाषा के नाम पर हिन्दी का यह कहकर विरोध करना शुरू किया कि अगर हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा बनेगी तो क्या अन्य सभी भाषाएँ यथा–बंगाली, तमिल, तेलगू आदि राष्ट्रेत्तर अथवा राष्ट्रविरोधी भाषाएँ हो जाएंगी। फलतः राष्ट्रभाषा हिन्दी के पक्ष में विभिन्न संवैधानिक प्रावधान किए गए ताकि आगे चलकर हिन्दी को मज़बूत स्थिति प्रदान की जा सकें।

भारत का संविधान हिन्दी को अपने अनुच्छेद 343 से 351 तक के द्वारा हिन्दी के पक्ष में विभिन्न संवैधानिक प्रावधान उपलब्ध कराता है, जिसके तहत न सिर्फ हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया, अपितु इस बात की भी अपेक्षा की गई कि संघ की राजभाषा को समृद्ध करने के लिए केंद्र यथासंभव उपाय करे। इसके तहत एक केन्द्रीय हिन्दी समिति की स्थापना की गई। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में यह समिति हिन्दी के विकास आदि के संबंध में निरीक्षण करती है।

शायद हमारे देश के लोग राष्ट्रभाषा के महत्व को या यूँ कहें कि राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के महत्व को नहीं समझ सके हैं। सामान्यतः हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में जोड़ने अथवा शब्द निर्माण के रूप में अज्ञानता को लोग दो प्रमुख कारणों से संबद्ध करते हैं:–

1. भारत एक बहुभाषी देश है, यहाँ कोई अकेली भाषा राष्ट्रनिर्माण को कैसे अंजाम दे सकती है।

2. हिन्दी बहुत अधिक समृद्ध व विकसित भाषा नहीं है, फलतः यह इस भूमिका को अच्छी तरह से नहीं निभा सकती।

हम दोनों कारणों की प्रकृति की जाँच करने पर पाते हैं कि ये दोनों ही कारण तर्क से परे हैं एवं गुमराह करने वाले हैं। यह सच है कि भारत एक बहुभाषी देश है एवं यहाँ कई भाषाएँ बोली जाती हैं। परंतु ऐसा नहीं है कि ऐसा किसी और देश में नहीं है। चीन की राष्ट्रभाषा मंडारिन चीन के 1949 में स्वतंत्रता से पूर्व एक छोटे से प्रदेश

में बोली जाती थी परंतु अज मंडारिन के साथ चीन की प्रगति से कौन अवगत नहीं है। इजरायल की राजभाषा हिब्रू जिससे इजरायल का राष्ट्रनिर्माण हुआ, कई हज़ार सालों से इजरायल में नहीं बोली जाती थी। ऐसे ही रूस ने 1917 की क्रांति के बाद जर्मन की जगह रूसी को राष्ट्रभाषा बनाया एवं राष्ट्रनिर्माण किया। आज इन भाषाओं के जोड़ने की क्षमता से पूरी दुनिया सहमत है, फिर हिन्दी तो देश के 70% लोगों के बीच बोली जाती है। अतः राष्ट्रनिर्माण में हिन्दी की महत्ता बहुत ही महत्वपूर्ण है।

इसका दूसरा बिंदु है कि, हिन्दी बहुत ही समृद्ध भाषा नहीं है। भाषा की समृद्धि को दो स्तरों पर समझा जा सकता है–प्रथमतः भाषा की वैज्ञानिकता के संबंध में तथा दूसरा भाषा की व्यापकता के संबंध में। जहाँ तक हिन्दी की वैज्ञानिकता का प्रश्न है, यह बात जगजाहिर है कि लिपि एवं ध्वनि के संबंध में हिन्दी, अंग्रेज़ी से कोसों आगे है। व्यापकता के संबंध में हिन्दी अंग्रेज़ी से पीछे है जो इस कारण से हुआ कि उपनिवेशवाद के दौर में अंग्रेज़ी उस देश की भाषा थी जिसने संपूर्ण विश्व पर राज किया जबकि हिन्दी एक उपनिवेश की भाषा थी। फलतः हिन्दी को व्यापक रूप से बढ़ने का मौका नहीं मिला।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने एवं राष्ट्रनिर्माण के संबंध में इसके महत्व को समझते हुए हम निम्न कदम उठा सकते हैं:–

1. प्रथमतः हमें त्रिभाषी फार्मूले को पूरी विश्वसनीयता के साथ अपनाना पड़ेगा। इस संबंध में सिर्फ खानापूर्ति से काम नहीं चलेगा। हिन्दी प्रदेश के लोगों को ही इसके लिए बड़ा दिल दिखाना होगा एवं हिन्दी व अंग्रेज़ी के अलावा तीसरी भाषा के रूप में कोई दक्षिणी भाषा अथवा उत्तरी–पूर्वी की भाषा सीखनी चाहिए।
2. सरकारी कर्मचारियों को केवल पारितोषिक के लिए हिन्दी में कार्य नहीं करना चाहिए, अपितु उन्हें सच्चे दिल से इस भाषा की उन्नति हेतु प्रयास करने चाहिए। यदि कोई कर्मचारी जिन्हें हिन्दी के लिए प्रशिक्षण व पुरस्कार मिला हो, हिन्दी में नहीं कार्य कर रहा हो, उसे दंडित करना चाहिए।
3. सरकारी नौकरशाहों व राजनेताओं को इसकी महत्ता को समझते हुए उसके लिए पर्याप्त उपाय करने होंगे।
4. केंद्रीय हिन्दी अनुवाद आयोग को अनुवाद के संबंध में संख्यात्मक नहीं, गुणात्मक प्रभाव देखने चाहिए। इसको ध्यान में रखकर ही अनुवाद व तकनीकी प्रयोग का विकास करना चाहिए।
5. हम सभी देशवासियों को भी इस संबंध में उतरदायित्व हैं एवं यथासंभव हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाना चाहिए।

इन उपायों को ध्यान में रखकर ही हम हिन्दी को राष्ट्रनिर्माण का प्रमुख अस्त्र बना सकते हैं एवं आए दिन होने वाले भाषाई झगड़ों को समाप्त कर सकते हैं। हम सभी राष्ट्रभाषा की महत्ता को समझते हैं एवं राष्ट्रनिर्माण के रूप में इसके योगदान से परिचित हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भी हिन्दी ने ऐसा कर दिखाया है आगे भी राष्ट्रनिर्माण के लिए उसे ऐसा ही करना होगा।

चटपटी चिट्ठी

रमेश कौल
स.ले.प.अ.

शिरीन के पति शहर के एक विद्यालय में अध्यापक थे। एक दिन उसने अपने पति को पत्र लिखा। अल्पज्ञानी होने के कारण उसे पता न था कि पूर्ण विराम कहां लगेगा। पत्र इस प्रकार था :–

मेरे प्यारे जीवन साथी, मेरा प्रणाम आपके चरणों में। आपने दो महीने से चिट्ठी नहीं लिखी मेरी सहेली को। आई.टी.आई में नौकरी मिली है हमारी गाय को। बछड़ा हुआ है दादा जी। शराब शुरू कर दी है मैंने। तुमको बहुत पत्र लिखे पर तुम नहीं आए कुत्ते के बच्चे। भेड़िया खा गया दो दिन का राशन। छुट्टी पर आते समय ले आना एक खूबसूरत औरत। मेरी सहेली बन गई है इस समय टी.वी पर गाना गा रही है हमारी बकरी। बेच दी गई है तुम्हारी मां। तुमको याद कर रही है एक पड़ोसन। हमें बहुत सता रही है तुम्हारी बहन। सिर दर्द से लेट रही है। खत लिखना मत। भूल जाना।

तुम्हारी पत्नी
शिरीन

समाज में नारी की स्थिति

मनु अरोड़ा
लेखा परीक्षक

रूपरेखा–

1. भूमिका
2. प्राचीन काल में नारी की स्थिति
3. बदलते दौर में नारी की स्थिति
4. सुधार के उपाय
5. उपसंहार

1. भूमिका– हमारे वेदों, शास्त्रों, महाकाव्यों में नारी को 'देवी' कहा गया है। नारी को जगत जननी भी कहा गया है। किंतु वास्तविकता में उसे इस तरह नहीं माना जाता। बदलते समय के अनुसार इसमें काफी सुधार हुए हैं और शहरों में नारी घर की चार दीवारी से निकलकर पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगी है। लेकिन नारी की स्थिति गांवों में, कस्बों में ज्यादा नहीं बदली है। आज भी नारी को समाज की पुरानी (रूढ़िवादी) मानसिकता का शिकार होना पड़ता है। अतः हम कह सकते हैं कि समाज में अभी भी "पुरुष प्रधानता" है। अतः नारी की स्थिति को बेहतर बनाने में तथा उसे पुरुषों के बराबर अधिकार और दर्जा दिलाने में अभी बहुत अधिक कार्य करने की आवश्यकता है।

2. प्राचीन काल में नारी की स्थिति– प्राचीन काल में (19 वीं या 20 वीं सदी में) नारी की स्थिति बहुत दयनीय थी। उन्हें केवल यह ही सिखाया जाता था कि उनके पति ही उनके परमेश्वर हैं और उनकी अपनी कोई अलग से पहचान नहीं है। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था और घर की चार दीवारी में ही रहना पड़ता था। कई प्रान्तों में नारी को उसके पति की मृत्यु के बाद उसके साथ ही सती होने को मजबूर किया जाता था। (सती प्रथा)। यद्यपि वेदों, पुराणों में नारी को देवी तुल्य माना गया हो, परन्तु समाज में अभी भी नारी को पुरुष के बराबर नहीं माना गया है। अनेक महापुरुषों ने 19वीं तथा 20वीं सदी में नारी की स्थिति सुधारने हेतु उपाय किए। लार्ड विलियम बैंटिक ने 1829 में सती प्रथा पर रोक लगाई। समाज में पुरुष की मृत्यु के बाद विधवा स्त्री को फिर से विवाह की अनुमति दी गई। राजा राम मोहन राय जैसे महापुरुषों ने स्त्री शिक्षा पर बल दिया।

स्त्रियों को भी घर की चार दीवारी से निकल कर बाहर काम करने की अनुमति कुछ हद तक प्रदान की गई। महारानी लक्ष्मीबाई, रजिया सुल्तान जैसी स्त्रियां भी उसी काल की हैं जिन्होंने क्रमशः अंग्रेजों की ईंट से ईंट बजाई तथा मुगलों की भारत पर सल्तनत का प्रतिनिधित्व किया। अतः इन स्त्रियों से प्रेरणा ग्रहण कर तथा समाज के कुछ महापुरुषों व स्त्री शिक्षा के समर्थकों के प्रयासों से कुछ स्त्रियों ने अलग अलग कार्यक्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई। इन स्त्रियों में श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्रीमती इंदिरा गांधी आदि के नाम लिए जा सकते हैं। इन स्त्रियों ने समाज की पुरानी रूढ़ियों, रीति रिवाजों, पर्दा प्रथा को तोड़कर समाज में अलग पहचान बनाई।

3. बदलते दौर में नारी की स्थिति– 20वीं सदी के अंत के वर्षों तथा आज के 21वीं सदी के बदलते दौर में नारी की स्थिति काफी हद तक सुधरी है। उन्हें शिक्षा दी जाती है। पर्दे में रहने पर विवश नहीं रहना पड़ता। आज समाज में "कल्पना चावला, मैरी कॉम, साइना नेहवाल, लता मंगेशकर" जैसी स्त्रियां आज की नारी की प्रेरणा स्रोत रही हैं। आज की नारी घर की चार दीवारी से निकल कर पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। अंतरिक्ष तक "कल्पना चावला" जैसी नारियां पहुँची हैं। किंतु दुःख की बात है कि नारी को अभी भी दहेज प्रथा के चक्र से मुक्ति नहीं मिली है। घरेलू तौर पर अभी भी समाज पुरुष प्रधान है। घर की चार दीवारी के अंदर किसी न किसी रूप में शारीरिक एवं मानसिक रूप में उनका शोषण किया जाता है। चलती बस में नारी के साथ बलात्कार की घटना, वह भी भारत की राजधानी दिल्ली में, ऐसे देश में जहां देवता भी अवतार लेकर निवास हेतु आए हैं, बहुत शर्मनाक है। आज नारी को "भ्रूण हत्या" के रूप में एक नए दुःखद से दो चार होना पड़ता है। लड़कियों को पैदा ही नहीं होने दिया जाता। आज हमारे देश में पुरुष स्त्री लिंगानुपात बहुत कम है। यद्यपि सरकार की तरफ से बहुत से क़दम उठाए गए हैं। किंतु स्थिति अभी भी संतोषजनक नहीं है।

4. सुधार के उपाय– आज के दौर में अपनी स्थिति को सुधारने हेतु नारी को स्वयं आगे आना होगा। उसे अपनी

कोख में लड़की की हत्या पर आवाज़ उठानी होगी। अपनी बहू बेटियों को शिक्षित करना होगा। युवाओं को भी आगे आना होगा। उन्हें अपनी बहनों, पत्नियों को उनके समान अधिकार देने की पहल करनी होगी। उन्हें अपने प्रतिद्वंदी के रूप में नहीं अपने पूरक के रूप में देखना होगा। नारी को समाज में इज्जत, मान सम्मान देना होगा। कहा जाता है कि औरत ही औरत की दुश्मन होती है। अतः सास को भी पोते का मोह छोड़कर पोते–पोती को समान समझकर अपनी बहू के गर्भ में पल रहे शिशु को जन्म लेने की अनुमति देनी होगी। "पुरूष प्रधान" समाज को "स्त्री–पुरूष" प्रधान समाज बनाना होगा। सबसे ज्यादा महत्व शिक्षा को देना होगा। नारी शिक्षित होकर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होगी। तथा अपने बहू–बेटियों को भी शिक्षित करेगी और तभी हमारा समाज नारी को बोझ नहीं समझेगा और उन्हें पुरूष के समान महत्व देगा।

5. उपसंहार– जिस धरती पर देवी देवता भी जन्म लेने को लालायित रहते हैं उस भूमि पर नारी की स्थिति अत्यन्त शोचनीय और दयनीय है। किन्तु यह स्थिति केवल एक दो लोगों के प्रयास से नहीं सुधरेगी इसको सुधारने के लिए सभी को मिलकर कार्य करना होगा। तभी नारी को पुरूष प्रधान समाज की मानसिकता, दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या से छुटकारा मिलेगा। अगर समाज में नारी को मान सम्मान मिलेगा तो देवताओं का आशीर्वाद भी हमारे ऊपर बना रहेगा और वे फिर से इस धरती पर अवतार हेतु आते रहेंगें। कहा भी गया है–

"यत्र नारीस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता"

अर्थात जहां नारियों (नारी) की पूजा होती है वहीं देवता निवास करते हैं। अतः समाज को खुशहाल बनाने के लिए नारी को पुरूष के समान समझना चाहिए।

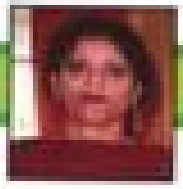

मैं लौट आया

दर्शना भारती
लेखा अधिकारी

अपने अरमानों की चादर लपेटे
अपनी भावनाओं को मन में समेटे
आज मैं निकल पड़ा हूं घर से, हमेशा के लिए
उस घर से जहां मैंने कितने सपने संजोये थे,
पर वक्त का कठोर उपहास
अब न कोई उम्मीद बची न कोई आस
एक–एक करके हर सपना बिखरता गया
उस रेत के टीले की तरह
जहां धुंधली सी आकृतियां आकर मुझे चिढ़ाती है
और पूछती है
"कहां गये वो साथी जिन पर तुझे गुमां था
क्यों तन्हा है तेरी महफिलें क्यों सूना तेरा कारवां है"
वो जिगर के टुकड़े जिनके लिए पल–पल जिया और मरा मैं।
आज अनजाने से काफिले में कहीं खो से गये है
भौतिकता की दौड़ में उनकी एक झलक पाने को तरस गया हूं मैं।
हल्के–हल्के पग भरता हुआ, क्या खोया क्या पाया जोड़–तोड़ करता हुआ
घर से कहीं दूर ऐसे मंजर से मेरा सामना हुआ
जहां बाप के झुके कांधे पे बोझा लदा था, बेटा चारपाई
मैं लेटा मौज उड़ा रहा था
इसी वक्त कहीं था किस्मत, बुढ़ापे की दहलीज पर
भी बच्चों के लिए पैसे कमा रहा था
पल भर में कहा, अपनी जवानी से लेकर बुढ़ापे का सफर
मेरी धुंधली सी आंखों में था।
बेशक मैं तन्हा रहा उम्र भर पर उस तन्हाई में
बच्चों की प्यारी सी मीठी यादों का समावेश था
न किसी से कोई शिकवा न कोई आक्रोश था
मैं चलता रहा एक अनजाने से सफर पर
पर अचानक एक आहट हुई, मेरे कांधे पे किसी का हाथ था
वापिस मुड़ा, मेरे पीछे मेरी बिटिया मुस्कुरा रही थी
अपने छोटे से मुन्ने को लिए उसे देख मेरे दिल की
मुरझाई कली खिल गई, मानो जन्नत मुझे मिल गई
फिर एक बार जीने की चाहत लिए, दिल में एक राहत लिए
मैं वापिस लौट आया।